दीवानों की हस्ती

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» शब्दार्थ समझना

प्रश्न 1 (आसान). कविता में "गोता" आया है। इसका भावार्थ क्या होगा?
उत्तर – डुबकी लगाना (पानी में भीतर तक जाना/डुबकी)।

प्रश्न 2 (आसान). शब्द "कारण, साधन" किस तरह की बात बताता है?
उत्तर – किस कारण से या किस साधन से बात हो रही है।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर "प्रयाण" शब्द समझ नहीं आए, तो कविता की समझ पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – पंक्ति का भाव और आगे की कड़ी स्पष्ट नहीं होगी; कविता धुंधली लगेगी।

प्रश्न 4 (कठिन). मान लो कविता में कोई शब्द "संयोग" है। शब्दार्थ समझकर आप पंक्ति का संबंध कैसे पकड़ेंगे?
उत्तर – आप समझेंगे कि यहाँ 'मिलना/एक साथ हो जाना' जैसा संयोग भाव है, इसलिए घटनाओं का संबंध उसी तरह जोड़ा जाएगा–सिर्फ अलग-अलग बातें नहीं लगेगी।

» आने का 'उल्लास' और जाने का 'आँसू'–भावार्थ

प्रश्न 5 (आसान). कविता में 'आए बनकर उल्लास' से क्या भाव मिलता है?
उत्तर – आने पर खुशी/उत्साह का भाव मिलता है।

प्रश्न 6 (आसान). 'आँसू बनकर बह चले' से क्या समझ आता है?
उत्तर – जाने पर दुख/विछोह का भाव समझ आता है।

प्रश्न 7 (मध्यम). कवि 'उल्लास' और 'आँसू' साथ-साथ क्यों दिखाता है? एक कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि जीवन में खुशी और दुख दोनों अनुभव आते हैं–आते समय उल्लास और जाते समय आँसू जैसा भाव बनता है।

प्रश्न 8 (कठिन). कारण-आधारित उत्तर लिखो: 'यह सिर्फ रोना नहीं, बल्कि जीवन-यात्रा का दुखद अनुभव'–इसे कविता की पंक्ति से जोड़कर समझाओ।
उत्तर – कविता में 'आँसू बनकर बह चले' रोने की साधारण बात नहीं है, बल्कि यह दिखाता है कि जाने पर उनके साथ विछोह/दुख का अनुभव होता है। इसलिए 'आँसू' उनके जाने के समय उस दुख की धारा है जो जीवन-यात्रा के अनुभव को प्रकट करती है।

» बेरोक प्यार और असफलता का 'भार'–मानसिक स्थिति

प्रश्न 9 (आसान). 'भार' यहाँ किस तरह का है–बाहर का या अंदर का?
उत्तर – अंदर का (असफलता का मनोवैज्ञानिक निशान/तनाव)।

प्रश्न 10 (आसान). कविता में "बेरोक प्यार" किस भाव को दिखाता है?
उत्तर – बहुत निछ्छल, बिना रोक-टोक प्यार देने का भाव।

प्रश्न 11 (मध्यम). 'अब अपना और पराया क्या?' सवाल किस वजह से आता है–प्यार की वजह से या असफलता के भार की वजह से?
उत्तर – असफलता के भार और मन के दबाव के कारण, जिससे रिश्तों/अपनापन पर असमंजस होता है।

प्रश्न 12 (कठिन). प्यार लुटाने के बावजूद कवि असफलता का भार क्यों कहता होगा? कविता की पंक्तियों के आधार पर 2 कारण लिखिए।

उत्तर – 1) 'ले असफलता का भार चले' दिखाता है कि असफलता का अनुभव मन पर चुभा हुआ है, इसलिए प्यार के साथ बोझ भी चलता है। 2) 'अब अपना और पराया क्या?' यह बताता है कि असफलता/कटु अनुभव के कारण कवि रिश्तों को लेकर भी उलझा हुआ है; इसलिए पूरा हल्का-सा उल्लास नहीं बनता।

» चलने का उद्देश्य–'किस ओर चले?' और 'चलना है'

प्रश्न 13 (आसान). कविता में "किस ओर चले?" किस तरह का सवाल है?

उत्तर – दिशा (कहाँ जाना है) पूछने वाला सवाल।

प्रश्न 14 (आसान). "चलना है, बस इसलिए चले" में कवि किस चीज़ पर जोर देता है?

उत्तर – दिशा से ज्यादा 'चलने के संकल्प' पर।

प्रश्न 15 (मध्यम). "जग से उसका कुछ लिए चले, जग को अपना कुछ दिए चले" से 'चलना' का उद्देश्य कैसे समझ में आता है?

उत्तर – चलना = दुनिया से कुछ ग्रहण करना भी और अपनी अच्छाई/योगदान देना भी।

प्रश्न 16 (कठिन). कविता में उल्लास और आँसू दोनों के साथ कवि 'चलना' की बात करता है। इससे यह कैसे तय होता है कि चलना सिर्फ खुशी का नाम नहीं है?

उत्तर – क्योंकि उल्लास के साथ आँसू भी आते हैं, फिर भी कवि रुकता नहीं–इसलिए चलना भावनाओं को साथ लेकर आगे बढ़ने का इरादा है, सिर्फ खुशी नहीं।

» 'जग से…वुफछ' और 'जग को…वुफछ'–देना-लेना का संतुलन

प्रश्न 17 (आसान). कविता में 'जग से…कुछ' का भावार्थ क्या है?

उत्तर – जग/दुनिया से जीवन की सीख या अनुभव लेकर आगे बढ़ना।

प्रश्न 18 (आसान). 'जग को…कुछ' में 'अपना' कुछ किस तरह का है?

उत्तर – अपने दिल का प्यार, स्नेह, मदद–जो हम दूसरों को देते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर केवल 'जग से लेना' हो और 'जग को देना' न हो, तो संबंध कैसा बनता है? कवि के विचार के अनुसार समझाइए।

उत्तर – रिश्ता असंतुलित हो जाता है–दूसरों के लिए बोझ जैसा लगने लगता है, क्योंकि केवल फायदा लेना होता है; कवि संतुलन चाहता है।

प्रश्न 20 (कठिन). कविता के अनुसार 'दो बात कही, दो बात सुनी… कुछ हँसे और फिर कुछ रोए' से 'देना-लेना का संतुलन' कैसे जुड़ता है?

उत्तर – कवि संतुलित रूप से बोलता और सुनता है–यानी जग से अनुभव/बात भी लेता है और जग को अपनी बात/प्यार भी देता है। इसी सच्चे जुड़ाव की वजह से कुछ लोगों की खुशी भी सामने आती है और कुछ का दुख/रोना भी–रिश्ता पूरा और वास्तविक बनता है।

» मस्ती और उसके खतरे–चर्चा-आधारित विचार

प्रश्न 21 (आसान). खेल के दौरान तेज़ हँसी और उल्लास ठीक है, पर कब वही मस्ती हानिकारक बन सकती है?

उत्तर – जब वह धक्का-मुक्की या किसी को चोट पहुँचाने लगे।

प्रश्न 22 (आसान). मस्ती कब जिम्मेदारी को सहारा देती है?

उत्तर – जब हम पढ़ाई/काम छोड़ें नहीं और भलाई के साथ व्यवहार रखें।

प्रश्न 23 (मध्यम). कविता में 'उल्लास' और 'आँसू' का साथ होना किस बात की तरफ इशारा करता है कि भाव कभी-कभी बदलते हैं? इस आधार पर मस्ती पर एक निष्कर्ष लिखो।

उत्तर – मस्ती अच्छा अहसास है, पर हालात बदलने पर भाव दुख तक भी जा सकते हैं; इसलिए मस्ती को समझदारी और नियंत्रण के साथ रखना चाहिए।

प्रश्न 24 (कठिन). कल्पना करो: दोस्त कहें, 'चल आज पूरा दिन मौज करो, पढ़ाई बाद में।' चर्चा करके बताओ–कौन-से 2 कारणों से यह 'मस्ती' हानिकारक हो सकती है?

उत्तर – पहला, पढ़ाई/समय बिगड़ने से भविष्य पर असर पड़ेगा। दूसरा, परीक्षा/जिम्मेदारी टूटने से तनाव और पछतावा बढ़ेगा, इसलिए मस्ती नुकसान बन सकती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. कविता की एक पंक्ति में "गोता" शब्द आया है। बताओ "गोता" का सही शब्दार्थ क्या होगा और उस शब्द से पंक्ति का भाव कैसे बनेगा?

› पहचानो: "गोता" एक कठिन/विशेष शब्द है।

› शब्दार्थ समझो: "गोता" का अर्थ–पानी में डुबकी लगाना।

› भाव के अनुसार सोचो: डुबकी लगाना सिर्फ गिरना नहीं, पानी में भीतर तक जाना/एक क्रिया करना है।

› फिर उसी भाव के साथ पंक्ति पढ़ो: अब दिमाग में साफ़ हरकत वाली तस्वीर बनेगी, इसलिए कविता की समझ बढ़ेगी।

उत्तर – "गोता" का अर्थ है डुबकी लगाना। इससे कविता में जो क्रिया/भाव दिखाया जा रहा है, उसकी स्पष्ट तस्वीर बनती है और पंक्ति का भावार्थ सही बैठता है।

उदाहरण 2. कविता की पंक्तियाँ–"आए बनकर उल्लास अभी, आँसू बनकर बह चले अभी"–का भावार्थ लिखिए। साथ ही बताइए कि 'उल्लास' और 'आँसू' यहाँ जीवन-यात्रा के किस अनुभव को दिखाते हैं।

› पहले 'उल्लास' पहचानो: आने के समय खुशी/उत्साह का भाव

› फिर 'आँसू' पहचानो: जाने के समय दुख/विछोह/भारी मन का भाव

› अब कारण जोड़ो: जीवन में कभी आनंद, कभी दुख का अनुभव आता है

› अंत में भावार्थ लिखो: भावों की धारा–उत्साह से विदाई तक

उत्तर – भावार्थ यह है कि कवि की बात "आना" और "जाना" के साथ जुड़े भावों के बारे में है। 'आए बनकर उल्लास' का मतलब है–जब वे सामने आते हैं तो उनके साथ खुशी और उत्साह का अनुभव आता है। 'आँसू बनकर बह चले' का मतलब है–जब वे आगे बढ़कर/जाते हैं, तो उसी अनुभव का दूसरा रूप दुख और विछोह की तरह उभरता है, जैसे आँखों से आँसू बह रहे हों। इस तरह कवि बताता है कि जीवन-यात्रा में भावों की दो धाराएँ चलती हैं–पहले उल्लास, बाद में आँसू।

उदाहरण 3. कविता के आधार पर बताइए कि कवि निराश है या प्रसन्न? "बेरोक प्यार" और "असफलता का भार" को जोड़कर कारण लिखिए।

› कविता की पंक्ति "ले असफलता का भार चले" से समझो कि असफलता का निशान मन में वजन की तरह है।

› यानी कवि प्यार लुटाता है, लेकिन पूरा आनंद/प्रसन्नता नहीं–भीतर प्रभावित है।

› "अब अपना और पराया क्या?" से पता चलता है कि रिश्तों को लेकर असमंजस है, यह भावनात्मक दबाव की वजह से आता है।

› फिर "हम अपने बंधन तोड़ चले" जोड़ो: कवि खुद से निकलने की कोशिश कर रहा है, इसलिए सिर्फ निराशा नहीं।

› निष्कर्ष लिखो: कवि की मानसिक स्थिति मिश्रित है–असफलता का बोझ + मुक्त होने/अंदर से आगे बढ़ने की चाह।

उत्तर – कवि पूरी तरह प्रसन्न नहीं है, क्योंकि "असफलता का भार" बताता है कि असफलता का निशान उसके मन में वजन की तरह साथ चल रहा है। साथ ही कवि निराश भी पूरी तरह नहीं है, क्योंकि "हम अपने बंधन तोड़ चले" से दिखता है कि वह खुद से निकलने की कोशिश कर रहा है। इसलिए कवि की मानसिक स्थिति मिश्रित है–अंदर दर्द/दबाव भी है और मुक्ति/आगे बढ़ने की चाह भी।

उदाहरण 4. कविता की पंक्तियाँ "किस ओर चले? यह मत पूछो, चलना है, बस इसलिए चले" और "जग से उसका कुछ लिए चले, जग को अपना कुछ दिए चले" को जोड़कर बताओ–कवि 'चलना' को दिशा से अधिक किस रूप में दिखाता है?

› पहले सवाल समझो: 'किस ओर चले?' = लोग पूछते हैं दिशा क्या है?
› कविता का टालना नोट करो: 'यह मत पूछो' के बाद 'चलना है' आता है–मतलब दिशा बाद में
› फिर उद्देश्य समझो: 'जग से उसका कुछ लिए' = जीवन से अनुभव/अच्छाई लेना
› और दूसरा पक्ष: 'जग को अपना कुछ दिए' = अपनी मस्ती/प्यार/योगदान देना
› अंत में भाव पकड़ो: मस्ती और आँसू दोनों के बावजूद चलने का संकल्प

उत्तर – कवि 'चलना' को नक्शे की दिशा नहीं मानता; वह इसे जीवन में आगे बढ़ने का संकल्प मानता है–जिसमें दुनिया से कुछ लेकर और दुनिया को कुछ देकर, मस्ती और आँसू दोनों के साथ चलते रहना शामिल है।

उदाहरण 5. कविता की पंक्तियाँ "जग से उसका वुफछ लिए चले, जग को अपना वुफछ दिए चले" के आधार पर बताइए–दीवानों की हस्ती में संबंध किस तरह बनते हैं? (भावार्थ लिखकर, संतुलन समझाइए।)

› पहले 'जग से...कुछ' का मतलब लिखो: दुनिया/लोगों से जीवन की सीख और अनुभव लेना।
› फिर 'जग को...कुछ' का मतलब लिखो: अपने अंदर का प्यार/स्नेह/सहारा देना।
› संतुलन स्पष्ट करो: सिर्फ लेना नहीं, सिर्फ देना भी नहीं–दोनों साथ रहें।
› बताओ इसका असर क्या है: संबंध सच्चा बनता है, इसलिए हँसी भी आती है और रोना भी।

उत्तर – दीवानों की हस्ती में संबंध इस संतुलन से बनते हैं कि कवि जग से 'उसका' कुछ–यानी दुनिया और लोगों से मिलने वाली सीख/अनुभव–लेकर आगे चलता है, और साथ ही जग को 'अपना' कुछ–यानी अपने दिल का प्यार/स्नेह/सहारा–देता चलता है। जब यह देना-लेना बराबर रहता है, रिश्ता सिर्फ खुशी तक नहीं रहता; उसमें सच्चे भाव जुड़ते हैं, इसलिए कुछ हँसते भी हैं और कुछ रोते भी–यानी संबंध की सच्चाई दोनों तरह के अनुभवों से दिखती है।

उदाहरण 6. प्रश्न: कविता से आगे–जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब वह हानिकारक हो सकती है? अपने सहपाठियों के साथ चर्चा के लिए एक तर्कपूर्ण निष्कर्ष लिखिए।

› पहले तय करो: मस्ती से क्या फायदा होता है–मन हल्का, ऊर्जा, साहस
› फिर सोचो: कब मस्ती नुकसान बनती है–जब असर नहीं सोचा जाता
› तीन संकेत लिखो: (1) दूसरों को चोट/हानी, (2) नियम/जिम्मेदारी टूटना, (3) जरूरी समय पर काम बिगड़ना
› अंत में निष्कर्ष: मस्ती तभी सही जब सीमा और संजम हो

उत्तर – जीवन में मस्ती जरूरी है क्योंकि वह खुशी और उत्साह देती है, लेकिन जब मस्ती बेपरवाही बन जाए–जैसे दूसरों को नुकसान पहुँचे, नियम/जिम्मेदारी टूटे, या जरूरी समय (जैसे पढ़ाई, मदद, परीक्षा) पर असर पड़े–तब वही मस्ती हानिकारक हो जाती है। इसलिए मस्ती को 'संजम' और 'भलाई' के साथ रखना चाहिए।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- कठिन शब्दों के अर्थ लिखकर 1-2 पंक्ति का भावार्थ भी लिखो–अंक बढ़ते हैं।
- भावार्थ में हमेशा 'भाव + कारण/अनुभव' लिखो–सिर्फ मतलब नहीं।
- उत्तर में "भार", "अपना-पराया" और "बंधन तोड़" तीनों पंक्तियाँ जोड़ो।
- कविता की 'दिशा' नहीं, 'जिंदगी में आगे बढ़ने का भाव' समझाकर लिखो।
- भावार्थ में 'लेना=सीख/अनुभव' और 'देना=प्यार/सहारा' लिखना जरूरी है।
- चर्चा-आधारित उत्तर में 'कब' और 'क्यों' लिखना ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› - अटकने वाले शब्द शब्दार्थ भावार्थ

› - उल्लास: आने की खुशी, आँसू: जाने का दुख

› - भार = अंदर का मनो-दबाव; प्यार साथ, फिर भी असर।

› केंद्र: दिशा नहीं, संकल्प–“चलना है, बस इसलिए चले।”

› ‘से’ लो, ‘को’ दो–संतुलन ही संबंध की जड़।

› मस्ती ठीक: भलाई+जिम्मेदारी; मस्ती गलत: नुकसान+बेपरवाही